



# | सफ्ट १८ सालों का |



३२ कविताएं

विकास बंसल द्वारा

लॉक कर दें...

मंच है ये हिन्दस्तान का, हर खास का और आम का  
मंच है ये ज़ज्बे का, विश्वास का और सम्मान का  
मंच है ये हिम्मत का, फ्रैसलों का, और हौसलों का  
मंच है ये अँखियाँ में पलते सपने और बनते घोंसलों का  
मंच है ये ज़ज्बातों का, ताल्लुक्रातों का, ख्यालातों का  
मंच है ये रिश्तों का, संबंधों का और मुलाकातों का  
मंच है ये भावनाओं का, आशाओं का, निराशाओं का  
मंच है ये हार, जीत की रोज़ नई नई परिभाषाओं का  
मंच है ये ज़िन्दगी का, बन्दगी का, सच्चाई और सादगी का  
मंच है जोश का, होश का, बस जीतने की दीवानगी का  
मंच नहीं ये क्रिस्मत का, मंच है ये हिम्मत का, मान का  
मंच है ये परीक्षाओं का, अभिलाषाओं का, ज्ञान के फ़रमान का  
मंच है ये हिन्दस्तान का, हर खास का और आम का  
मंच है ये ज़ज्बे का, विश्वास का और सम्मान का



उपर लिखी कविता किस कवि ने लिखी है ?

- |                            |                |
|----------------------------|----------------|
| A: अमिता <small>नम</small> | B: विकास बंसल  |
| C: अरुण कोलटकर             | D: तिशानी दोशी |

कछ सवालों के जवाब पाने के लिये खुद से बहस करनी पड़ती है,  
 और हो जाएँ जब आप इस क्राबिल तो ज़माने की आप पर नजर पड़ती है  
 और सवालों की कशमकश से जब आप करना चाहते हों दो दो हाथ  
 तो ज़रूरत पड़ती है कुछ दोस्तों की जो देते आपका पल पल साथ  
 उनका साथ बढ़ाता आपकी हिम्मत देता क्रदम क्रदम पर आपको हौसला  
 बढ़ जाती ज़िम्मेदारी आप पर जब दुनिया देखती क्या करेंगे आप फैसला  
 चलते हैं जब आप कठिन डगर पर तो चारों दिशाएँ आपके साथ चलती हैं  
 शुक्र है भगवान का इस खेल में कछ जीवन रेखाएँ बदलती हैं  
 दिखानी है हिम्मत, बढ़ना है आगे और जीतना है ज़रूर इस बार  
 कुछ अधूरे ख्वाब, आपके जवाब, ये है कौन बनेगा करोड़पति दशावतार  
 देखना है किस्मत मेरी इस बार खुद से कितनी देर तक झगड़ती है  
 कछ सवालों के जवाब पाने के लिये खुद से बहस करनी पड़ती है,  
 और हो जाएँ जब आप इस क्राबिल तो ज़माने की आप पर नजर पड़ती है।



अमिताब बच्चन विकास बंसल को क्या नाम से बुलाते हैं ?

- |                 |                  |
|-----------------|------------------|
| A: विकासजी बंसल | B: बंसलजी विकास  |
| C: कर्व महाशय   | D: कर्वराज विकास |

१८ सालों से चल रहा निरंतर ये चलन  
 लेकर आ रहे सर जी के बी सी दशम्  
 सोच थी ये ख़ूब जिसमें,  
 आम को ख़ास बनाने के बारे में सोचा  
 ज्ञान से ज़िन्दगियाँ बदलने के बारे में सोचा  
 सोच थी ये ख़ूब जिसमें,  
 देकर सम्मान गले लगाने के बारे में सोचा  
 दूसरों के दुखों को अपना बनाने के बारे में सोचा  
 सोच थी ये ख़ूब जिसमें,  
 हमारी सुनने अपनी सुनाने के बारे में सोचा  
 खुद हँसकर दूसरों को हँसाने के बारे में सोचा  
 सोच थी ये ख़ूब जिसमें,  
 पल पल करोड़पति बनाने के बारे में सोचा  
 जीत कर दिलों को करोड़ों जीताने के बारे में सोचा  
 बन सकते देकर जवाब आप करोड़पति स्वयम्  
  
 १८ सालों से चल रहा निरंतर ये चलन  
 लेकर आ रहे सर जी के बी सी दशम्



उपर लिखी कविता किस कवि ने लिखी है ?

- |                 |                |
|-----------------|----------------|
| A: अमिता प्रितम | B: विकास बंसल  |
| C: अरुण कोलटकर  | D: तिशानी दोशी |

सन्नाटों को चीर मझे सबके बीच अपना स्वर लेकर पहुँचना है  
चल रहा हौसलों के साथ, मुझे खुशियों के घर पहुँचना है

नापनी पड़ जाए ये धरती तो भी पीछे नहीं हटूँगा मैं अब  
अपनी मंज़िल पर उम्मीदों के साथ चलकर पहुँचना है

आँधियाँ हैं आई हुई, तूफानों का भी ऐतबार नहीं अब  
हो जाए कुछ भी हर मुश्किल से निकलकर पहुँचना है

सामान्य सा मैं किरदार नहीं, मजबूर हूँ पर लाचार नहीं  
लड़ना है दुश्मनों के बीच से मुझे संभलकर पहुँचना है

घूट अपमान के पिए हैं मैंने, जानता हूँ कैसे लम्हे जिए हैं मैंने  
उफान पर लहरें हैं मुझे सब लहरों से बचकर पहुँचना है

सवाल वो ही बार बार पूछते हैं कि कब तक रोकोगे तम  
बिखरा बिखरा हूँ मैं मुझे अब वहाँ सिमटकर पहुँचना है

सन्नाटों को चीर मझे सबके बीच अपना स्वर लेकर पहुँचना है  
चल रहा हौसलों के साथ, मुझे खुशियों के घर पहुँचना है



अमिताब बच्चन विकास बंसल को क्या नाम से बुलाते हैं ?

- |                 |                 |
|-----------------|-----------------|
| A. विकासजी बंसल | B. बंसलजी विकास |
| C. कर्मज महाशय  | D. कविराज विकास |

कब तक रोकोगे.....

आ गया वो मौका जिसकी थी तँझे तलाश  
कर ले तैयार खुद को, कर खुद पर विश्वास  
आ रही खुशियाँ देख फैलाकर अपनी बाँहें  
मिल ले गले तू उनसे छोड़ सब सवाल और काश  
करना है फैसला, दिखा हौसला, बैठ कर कब तक सोचोगे  
खुद को कब तक रोकोगे.....

ऐसा क्या है यहाँ जो तू आज कर नहीं सकता  
क्यों तू अपनी मुश्किलों से निकल नहीं सकता  
जमाने की नज़र तँझ पर है और सब देख रहे  
हिम्मत से अपनी तू अपनी लकीरों को बदल सकता

ले ले कर नाम किस्मत का बार बार कब तक खुद को कोसोगे  
खुद को कब तक रोकोगे.....

मत रोक खुद को कर तू खुद को अब बलंद  
आवाज़ दे रही खुशियाँ अब खुद को रोकना बंद



उपर लिखी कविता किस कवि ने लिखी है ?

- |                 |                |
|-----------------|----------------|
| A: अमिता प्रितम | B: विकास बंसल  |
| C: अरुण कोलटकर  | D: तिशानी दोशी |

शिवत से हिम्मत होती है, ख़द के हाथों में ख़द की क्रिस्मत होती है  
होसलों से होती है उड़ान, जीतते हैं वो जिनको जीतने की ज़िद होती है

मिलता है मौका सबको यहाँ पर मौके को भनाना सबके बस की बात नहीं  
करते रहना प्रयास भी आसान नहीं होता, जुनून की कहाँ कोई हद होती है

बहुत जतन करने पड़ते हैं सपनों को हकीकत में बदलने के लिये  
सपने देखने चाहिए सभी को, सपनों की कहाँ कोई सरहद होती है

सवाल, सवाल और बस सवाल ही सवाल पूछती है ज़िन्दगी हर कदम पर  
सोच समझकर देना जवाब, सही गलत के बीच बहुत जद्वोजहद होती है

चलों करे फिर प्रयास, लगाये जीत कि आस, धूमने लगे ख़शियाँ आसपास  
दिखाते जब होसला कुछ करने का मिलती जीत तो खुशी बँहद होती है

शिवत से हिम्मत होती है, ख़द के हाथों में ख़द की क्रिस्मत होती है  
होसलों से होती है उड़ान, जीतते हैं वो जिनको जीतने की ज़िद होती है

आमिताब बच्चन विकास बंसल को क्या नाम से बुलाते हैं ?

A: विकासजी बंसल	B: बंसलजी विकास
C: ऋषि महाराज	D: कविराज विकास

ज्ञान से कैसे मिलता सम्मान देखेंगे  
 हम फिर एक नया हिन्दुस्तान देखेंगे  
 छोटी छोटी अँखियाँ, बड़े बड़े सपने  
 किसको मिलती यहाँ पहचान देखेंगे  
 क्रिस्मत क्या है, खद बना सकते हैं आप  
 पंखों से नहीं हम हौसलों से उड़ान देखेंगे  
 खटखटा रही हैं दरवाज़ा खुशियाँ देखो  
 वो होगा कौन सा यहाँ अब मकान देखेंगे  
 प्रयास सब करते हैं पर सफलता ज़रूरी नहीं  
 आँसू जीत के और हार की मुस्कान देखेंगे  
 निकल गई देश की बेटियाँ कितनी आगे आज  
 देखेगा हर पिता और सब भाईजान देखेंगे  
 क्रिस्मत नहीं कुछ भी जो है वो मेहनत है  
 हथेलियों पर बदलती लकीरों के निशान देखेंगे  
 क्रतार में सबसे आगे वाले होंगे मेजबान  
 हम सब घरों में अपने बनकर उनके मेहमान देखेंगे  
 ज्ञान से कैसे मिलता सम्मान देखेंगे  
 हम फिर एक नया हिन्दुस्तान देखेंगे



उपर लिखी कविता किस कवि ने लिखी है ?

- |                    |                |
|--------------------|----------------|
| A: अंग्रेता प्रितम | B: विकास बंसल  |
| C: अरुण कोलटकर     | D: तिशानी दोशी |

सफर कौन बनेगा करोड़पति का शरू हआ और निरंतर चला  
हुए जाने कितने गज्जब यहाँ जाने कितने अजब लोगों से मिला

मिला ये गाँव से, शहर से, मिला ये हिन्दुस्तान की बस्तियों से  
कुछ कर गये वो गज्जब काम मिला ये उन नायाब हस्तियों से  
कोई अपनों का सताया था, किसी को ज़माने ने ठुकराया था  
कोई लड़ा अकेले अपने हङ्क के लिये,  
किसी ने ज़माने को कुछ कर दिखाया था

ज्ञान की हुई परीक्षा यहाँ, चमत्कार यहाँ बार बार हुए, हर बार हुए  
सपने जो पूरे न हो सके सपने में भी वो सब सपने यहाँ साकार हुए

किसी की हुई थी जग हँसाई,  
किसी ने यहाँ से सबको अपनी असलियत बतलाई  
सच्चे का यहाँ हरदम हुआ बोलबाला  
और झूठ ने भी कभी न झूठ कहने की क्रसम खाई

सफर ये आसान न था बिना आपके,  
आप आते रहे, बताते रहे तो सफर कट गया  
ख़ुशियों की मिली सौग़ात, हर बार नई बात,  
जाने कितनों का दुख यहाँ आकर बँट गया

दिखा चका है बहुत ये पर अभी बहुत बचा है  
देखना है इस बार इस मंच ने क्या खेल रचा है  
हिन्दुस्तान की वही तस्वीर जिस पर है हमें गर्व  
दिखाने एक बार फिर ये मंच सजा है



अमिताब बच्चन विकास बंसल को क्या नाम से बुलाते हैं ?

A: विकासजी बंसल

B: बंसलजी विकास

C: कवि महाशय

D: कर्विराज विकास

मुझे चलना है आगे बढ़ना है मैं स्कना नहीं चाहता  
टूट जाने को मैं हूँ तैयार पर मैं अब यहाँ झुकना नहीं चाहता  
जीना चाहता हूँ मैं ज़िन्दगी, देना चाहता हूँ मैं सबको रोशनी  
जलने को हूँ तैयार बनकर चिराग मैं अब बुझना नहीं चाहता

सुख के लिये ही तो है सब लड़ाई यहाँ लड़ने को मैं तैयार  
करूँ मैं दुख का सामना जहाँ मैं उन गलियों से अब गुज़रना नहीं चाहता  
सच के लिये तो जो होगा वो कर जाऊँगा मैं भी यहाँ  
झूठ के लिये करूँगा न कुछ, मैं झूठ के लिये लड़ना नहीं चाहता  
सपनों की बात तो वो ही करते हैं जिनमें पूरा करने का दम होता  
याद है मुझे हर एक सपना करना है पूरा मैं कुछ भी भूलना नहीं चाहता  
कब तक रोकोगे ज़माने वालों मुझे तम मंज़िल तक पहुँचने से  
न समझाओ मुझे सही शलत, मैं कुछ भी अब समझना नहीं चाहता  
मुझे चलना है आगे बढ़ना है मैं अब रुकना नहीं चाहता  
टूट जाने को मैं हूँ तैयार मैं अब यहाँ झुकना नहीं चाहता



उपर लिखी कविता किस कवि ने लिखी है ?

- |                   |                |
|-------------------|----------------|
| A: अन्निता प्रितम | B: विकास बंसल  |
| C: अरुण कोलटकर    | D: तिशानी दोशी |

सालों से चल रहा निरंतर ये चलन  
 लेकर आ रहे सर जी के बी सी दशम्  
  
 सोच थी ये खूब जिसमें,  
 आम को खास बनाने के बारे में सोचा  
 ज्ञान से ज़िन्दगियाँ बदलने के बारे में सोचा  
  
 सोच थी ये खूब जिसमें,  
 देकर सम्मान गले लगाने के बारे में सोचा  
 दूसरों के दुखों को अपना बनाने के बारे में सोचा  
  
 सोच थी ये खूब जिसमें,  
 हमारी सुनने अपनी सुनाने के बारे में सोचा  
 खुद हँसकर दूसरों को हँसाने के बारे में सोचा  
  
 सोच थी ये खूब जिसमें,  
 पल पल करोड़पति बनाने के बारे में सोचा  
 जीत कर दिलों को करोड़ों जिताने के बारे में सोचा  
  
 बन सकते देकर जवाब आप करोड़पति स्वयम्  
  
 सालों से चल रहा निरंतर ये चलन  
 लेकर आ रहे सर जी के बी सी दशम्



उपर लिखी कविता किस कवि ने लिखी है ?

- |                 |                |
|-----------------|----------------|
| A: अमिता प्रितम | B: विकास बंसल  |
| C: अरुण कोलटकर  | D: तिशानी दोशी |

घबरा कर यहाँ मसले हल नहीं होते  
 हिम्मत करने वाले विफल नहीं होते  
  
 जवाब देना चाहो तो दे सकते हो आप  
 कुछ सवाल इतने भी मुश्किल नहीं होते  
  
 विश्वास की नींव पर खड़े होते हैं रिश्ते  
 मज़बूत रिश्ते यूँ ही हासिल नहीं होते  
  
 पहचान बनाने वाले बना ही लेते पहचान  
 कुछ लोग कभी भीड़ में शामिल नहीं होते  
  
 क्यों देता वो हमें साँसों का तोहफ़ा सोचो  
 जो हम इंसान बनने के क़ाबिल नहीं होते  
  
 दे दे जो चाहे वो सज्जा हमें हम बदलेंगे नहीं  
 कुछ फरमान कभी भी तामील नहीं होते  
  
 घबरा कर यहाँ मसले हल नहीं होते  
 हिम्मत करने वाले विफल नहीं होते  
  
 जवाब देना चाहो तो दे सकते हो आप  
 कुछ सवाल इतने भी मुश्किल नहीं होते



अमिताब बच्चन विकास बंसल को क्या नाम से बुलाते हैं ?

- |                     |                 |
|---------------------|-----------------|
| A. विकासजी बंसल     | B. बंसलजी विकास |
| C. कर्कि भट्टाचार्य | D. कविराज विकास |



न तू जबरदस्ती सह  
 जो मन में आये कह  
 बदल न खुद को तू  
 तू तो बस तू ही रह  
  
 न बिखर तू पा ले शिखर तू  
 हों ज़ज्बात तो आँखों से बह  
  
 कर खुद अपनी तक़दीर का फैसला  
 दिखा दे तू हिम्मत अपनी और हौसला  
  
 कुछ नहीं होता यहाँ पहले से तय  
 तू तो बस तू है रह, बस तू ही रह  
  
 क्या वो कह रहा, क्या तू सुन रहा  
 सपने नए नए रोज़ तू बुन रहा  
 करने को सपने सच हो जा प्रयास रत  
 कहाँ यहाँ जीतने की होती कोई हद  
  
 कर दे दूर डर अपना और दूर कर भय  
 तू तो बस तू है रह, बस तू ही रह  
  
 दुनिया देख रही तेरा असर, तेरा सफर  
 कर तू सब अच्छा कर, देख रही नज़र  
 माना आसान नहीं होती जीतने की डगर  
 निकल जा तू अब छोड़ अपनी सब फ़िकर  
  
 टूटे न धार अब ये और न टूटे ये लय  
 तू तो बस तू है, रह बस तू ही रह



उपर लिखी कविता किस कवि ने लिखी है ?

- |                 |                |
|-----------------|----------------|
| A: अमिता प्रितम | B: विकास बंसल  |
| C: अरुण कोलटकर  | D: निशानी दोशी |

क्या करता मैं, क्यों करता मैं, कब तक मुझे को टोकोगे  
 हारना नहीं है मुझे जीतने से तुम कब तक रोकोगे  
 गिनने हैं तारे मुझको, चाँद को छूकर अब आना है  
 सवाल बहुत है यहाँ मुझे अब सबका जवाब बन जाना है  
 निकला हूँ घर से लेकर कछ सपने, अरमान, हौसला  
 पनाह मुझे मिल ही जाएगी साथ है मेरे ज्ञान का धोसला  
 करने से मिलता सब कछ प्रयासों में मेरे कोई कमी न होगी  
 हो चाहे कुछ भी अब आँखों में मेरी कभी भी नमी न होगी  
 जानता नहीं मैं भी कि कब खत्म होगा मेरा ये अब सफर  
 पाना है मंज़िल को अपनी छोड़ूँगा न मैं कोई भी कसर  
 क्या मिलती खुशी तुम्हें कब तक तानों के पत्थर फेंकोगे  
 क्या करता मैं, क्यों करता मैं, कब तक मुझे को टोकेगे  
 हारना नहीं है मुझे जीतने से तुम कब तक रोकोगे



अमिताब बच्चन विकास बंसल को क्या नाम से बुलाते हैं ?

- |                 |                 |
|-----------------|-----------------|
| A: विकासजी बंसल | B: बंसलजी विकास |
| C: कर्व महाराव  | D: कविराज विकास |

कब तक रोकोगे.....

कब तक रोकोगे आप खुद को देखने से हिन्दुस्तान का ये खेल निराला  
कब तक रोकोगे आप खुद को देखने से कम्प्यूटर जी को लगाते हुये ताला

कब तक रोकोगे खुद को देखने से क्रिस्मतों को यहाँ बदलते हुए

कब तक रोकोगे खुद को देखने से हालातों को यहाँ सुधरते हुए

कब तक रोकोगे खुद को आप जब होगा नमस्कार, आभार अभिनंदन

कब तक रोकोगे खुद को देखने से ज्ञान से जिन्दगियों में होता परिवर्तन

कब तक रोकोगे खुद को आप दूसरों के दुख सुख में होने से शामिल

कब तक रोकोगे खुद को आप जाने से वहाँ बनने से जीतने के क्राबिल

कब तक रोकोगे आप हिन्दुस्तान को आगे बढ़ने से, लड़ने से

कब तक रोकोगे आप हिन्दुस्तान की नारी को आगे निकलने, पढ़ने से

कब तक रोकोगे आप उसे जो अब सब भलाकर कछ करने को तैयार

कब तक रोकोगे आप उन्हें जो छूना चाहते बुलन्दियाँ को इस बार

कब तक रोकोगे.....



उपर लिखी कविता किस कवि ने लिखी है ?

A. अमिता प्रितम

B. विकास बंसल

C. अरुण कोलटकर

D. तिशानी दोशी

छोटी छोटी अँखियों में बड़े बड़े अरमान हैं  
 उड़ जा तू हौसलों से खुला आसमान है  
 सवाल है बहत कब तक रोकोगे खुद को  
 तेरे जवाब ही अब तेरी यहाँ पहचान हैं  
 जिन्दगी तेरी तो सब कुछ तू ही कर यहाँ  
 जान से अपने तुझे पाना अब सम्मान है  
 चाक पर मिट्ठी का घड़ा बना देता है कुम्हार  
 अपनी प्रतिभाओं से अब तक तू अनजान है  
 बहुत जल्द मिल जायेंगे जवाब हर सवाल के  
 चल रही है घड़ी समय का हो चुका ऐलान है  
 हार जीत हिस्सा है खेल का पर तुझे खेलना होगा  
 कर ले सीना चौड़ा तुझे देख रहा हिन्दुस्तान है  
 छोटी छोटी अँखियों में बड़े बड़े अरमान हैं  
 उड़ जा तू हौसलों से खुला आसमान है  
 सवाल है बहत कब तक रोकोगे खुद को  
 तेरे जवाब ही अब तेरी यहाँ पहचान हैं



अमिताब बच्चन विकास बंसल को क्या नाम से बुलाते हैं ?

- |                  |                  |
|------------------|------------------|
| A: विकास जी बंसल | B: बंसल जी विकास |
| C: डर्बी महाशय   | D: कविराज विकास  |

दिखा हिम्मत, कर हौसला, मुझी में तेरी हर मुक्राम होगा  
लहराएगा सफलता का परचम, क्रिस्मत का फ़रमान होगा

जो अपने पे तू आ जाये और कर दे बगावत लहरों के खिलाफ़  
भाग जायेगा डर के, शांत खुद ब खुद यहाँ हर तूफ़ान होगा

होंगे चर्चे तेरे ही गली गली, गाँव गाँव और शहर शहर में  
देश के बच्चे बच्चे की ज़ुबान पर बस तेरा ही अब नाम होगा

मंज़िलों पर पहुँच कर भी रुकना नहीं तू कभी, चलते रहना  
आते जाते रहेंगे लोग यहाँ वहाँ मंज़िलों पर तेरा ही निशाँ होगा

गले मिलेगा तू खुशियों से गाम कहीं मुँह छिपाये खड़ा होगा  
तेरी मेहनत, हिम्मत रंग लाएगी, सफलताओं का इनाम होगा

दिखा हिम्मत, कर हौसला, मुझी में तेरी हर मुक्राम होगा  
लहराएगा सफलता का परचम, क्रिस्मत का फ़रमान होगा



उपर लिखी कविता किस कवि ने लिखी है ?

A: अमिता प्रितम

B: विकास बंसल

C: अरुण कोलटकर

D: तिशानी देशी

बिखरे हैं ख्वाब तेरे, समेट ले तू मेरे यार  
 आ रहा कौन बनेगा करोड़पति दशावतार  
  
 समेट सपनों को तू लड़ने को खड़ा हो जा  
 अपने ज्ञान को बना ले तू अपना हथियार  
  
 बहुत हो चका अब और नहीं, हारना नहीं  
 जवाबों में छुपी है जीत तेरी बनना होशियार  
  
 बातें बातों से निकलेंगी जब होगा खेल शुरू  
 गले मिलने को खुशियाँ भी तुझसे हैं बेकरार  
  
 देना होगा पल पल का हिसाब, जवाब तुझे  
 हो जा पक्का कर ले तू खुद को अब तैयार  
  
 किस किसने, कब कब, क्या क्या किया  
 रह संग ज्ञान ये ही होगा तेरी जीत का आधार  
  
 क्रिस्मत दरवाज़ा खटखटा रही, बुला रही  
 देना जवाब तू बस अब जीत का है इंतज़ार  
  
 बिखरे हैं ख्वाब तेरे, समेट ले तू मेरे यार  
 आ रहा कौन बनेगा करोड़पति दशावतार



अमिताब बच्चन विकास बंसल को क्या नाम से बुलाते हैं ?

A: विकासजी बंसल

C: कर्वा महाशय

B: बंसलजी विकास

D: कर्वाराज विकास

मिलता हर्ष नहीं जब तक जीवन में तम्हारे संघर्ष नहीं  
 कुछ भी नहीं मिलता जब तक होता हौसलों का स्पर्श नहीं  
  
 कर कर तू प्रयास कर पाने को मंज़िल चलता चल  
 मिल कर ही रहेगी होगी कोई कोशिश तेरी व्यर्थ नहीं  
  
 मत घबरा तू अकेलेपन से बना ले परछाई को दोस्त  
 यहाँ कोई भी संबंध, रिश्ता जाता कभी भी व्यर्थ नहीं  
  
 समझते हैं तझे जो कमज़ोर दे दे जवाब तू उन सबको आज  
 चुप हो जायेगा ज़माना, तू अज्ञानी नहीं, तू असमर्थ नहीं  
  
 मत दे खुद को दोष हो चका तेरी जीत का अब जयघोष  
 जीत कर मंज़िल पर पहुँचने से बड़ा यहाँ कोई अब हर्ष नहीं  
  
 सिलसिला ये दिलों को जीतने का चल रहा निरंतर  
 जो बदलती न ज़िन्दगी यहाँ तो चलता ये इतने वर्ष नहीं  
  
 मिलता हर्ष नहीं जब तक जीवन में तम्हारे संघर्ष नहीं  
 कुछ भी नहीं मिलता जब तक होता हौसलों का स्पर्श नहीं



उपर लिखी कविता किस कवि ने लिखी है ?

- |                 |                |
|-----------------|----------------|
| A: अनिता प्रितम | B: विकास बंसल  |
| C: अरुण कोलटकर  | D: तिशानी दोशी |

जिन्दगी की समस्या तो हर दिन नई खड़ी है  
 जीत जाते हैं वो जिनकी सोच कुछ बड़ी है  
 आ गया है समय कुछ कर दिखलाने का अब  
 लम्हा कटता मुश्किल टिक टिक करती घड़ी है  
 कोसना क्रिस्मस को सुन कर बात ज़माने की  
 ये क्रिस्मस भी जाने कितनी बार होसलों से लड़ी है  
 सफलताओं आशाओं को तू अपना गुलाम बना ले  
 बदल सकता क्रिस्मस ज्ञान से वो जादू की छड़ी है  
 सजा ले तू ख्वाब सुनहरे अपनी पलकों पर फिर एक बार  
 मन बहल जाएगा चलने वाली यहाँ खुशियों की फुलझड़ी है  
 कब तक रोकोगे खुद को पूछता है ज़माना ये सवाल  
 कर ले तैयार, फिर एक बार आ गई जवाब देने की घड़ी है  
 जिन्दगी की समस्या तो हर दिन नई खड़ी है  
 जीत जाते हैं वो जिनकी सोच कुछ बड़ी है  
 आ गया है समय कुछ कर दिखलाने का अब  
 लम्हा कटता मुश्किल टिक टिक करती घड़ी है



अमिताब बच्चन विकास बंसल को क्या नाम से बुलाते हैं ?

- |                 |                 |
|-----------------|-----------------|
| A. विकासजी बंसल | B. बंसलगी विकास |
| C. शर्व महाशय   | D. कविराज विकास |

सपनों को हकीकत में बदलने का मौका फिर एक बार  
 सज चुका है मंच करोड़पति का तैयार है सूत्रधार  
 कभी घड़ियाल बाबू, टिकटिकी देवी तो कभी सुई मई  
 पल पल चलती रहती बदलती रहती क्रिस्मस ये सुई  
 वो बुलाना उनका प्यार से करना स्वागत, अभिनंदन, आभार  
 खुद को कब तक रोकोगे पूछ रहे वो सबसे अबकी बार  
 धेर्य, हिम्मत, ज्ञान बस ये सब हैं यहाँ सफलता की कंजी  
 पैसों के साथ साथ ले जाता खेलने वाला मधुर यादों की पूँजी  
 सवाल पर सवाल पूछे कम्प्यूटर जी पैसा बहुत बढ़ता जाए  
 जीतता वो ही है जो लेकर होसलों को बस आगे बढ़ता जाए  
 तालियों की गड़गड़ाहट, मन में घबराहट, खेल जब चले  
 खुशनसीब हैं हम सब क्योंकि हमें अमिताभ बच्चन जी मिले  
 गहराई है बहुत होसलों में डूबते जाओगे जितना कुछ नया देखोगे  
 देखेगा हिन्दुस्तान बनते हुए मिसाल नई रोज़ तुम खुद को कब तक रोकोगे



अमिताब बच्चन विकास बंसल को क्या नाम से बुलाते हैं ?

A. विकासजी बंसल

B. बंसलजी विकास

C. कर्वि महाराव

D. कविराज विकास

चिराग जल रहा, रोशन फ़िज़ाओं को कर रहा  
 तूफ़ान भी सोच सोच के हैरान बहुत वो डर रहा  
 चिरागों ने कर लिया फ़ैसला, दिखाना अब हौसला  
 स्कना नहीं बढ़ना है बस आगे ही आगे चाहे हो ज़लज़ला  
 तुम कब तक बैठ कर यूँ ही बस सोचोगे  
 ख़ुद को कब तक रोकोगे

हसरतों से समझौता अब और नहीं  
 अरमानों को रोकना अब और नहीं  
 ज़िन्दगी कट गई लोगों की सुनते सुनते  
 ज़िन्दगी कट गई सपनों को बुनते बुनते  
 बनाकर मँह उदास तुम कब तक बैठोगे  
 ख़ुद को कब तक रोकोगे

ये ही वो मंच है जहाँ सपने साकार होते हैं  
 हिम्मत और ज्ञान से यहाँ रोज़ चमत्कार होते हैं  
 जब दुःख और सुख का होता मिलन तो आँखों का नम होना लाज़मी है  
 बढ़ बढ़ तू बस आगे बढ़ मत सोच तुझमें कोई कमी है  
 अपमान की आग में तम ख़ुद को कब तक झ़ोकोगे  
 ख़ुद को कब तक रोकोगे



उपर लिखी कविता किस कवि ने लिखी है ?

A: अमिता प्रितम

B: विकास बंसल

C: अरुण कोलटकर

D: तिशानी दोशी

छोटी छोटी अँखियों में बड़े बड़े सपने पलने का समय आ गया  
 बहुत हो चुका गम, खुशियों से गले मिलने का समय आ गया  
 जामाने ने बहत कुछ कहा, तुमने बहुत कुछ सुना, पर अब नहीं  
 आँखों में अँखें डालकर सर उठा कर चलने का समय आ गया  
 कब तक बैठे रहेंगे यूँ ही घर पर कि क्रिस्मत दरवाजा खटखटाएगी  
 होसलों के पथ पर चलना है घर से निकलने का समय आ गया  
 कोशिश करता इंसान तो गिरता है और सँभलता है, चलता है  
 बदलाव सफलता की कुंजी है, खुद को बदलने का समय आ गया  
 माना की गमों से घिरे घिरे मुरझा चुके हो तुम बहुत अब तक  
 महकी खुशियों की फुलवारी, आशाओं के फूल खिलने का समय आ गया  
 छोटी छोटी अँखियों में बड़े बड़े सपने पलने का समय आ गया  
 बहुत हो चुका गम, खुशियों से गले मिलने का समय आ गया



अमिताब बच्चन विकास बंसल को क्या नाम से बुलाते हैं ?

A: विकासजी बंसल

B: बंसलजी विकास

C: कवि महाशय

D: कविराज विकास

मजबूर हूँ पर कमज़ोर नहीं  
 मैं कटने वाली पतंग की डोर नहीं  
  
 डरने वाला नहीं मैं तूफानों से अब  
 मेरे हौसलों का देखा तुमने ज़ोर नहीं  
  
 सुन सुन कर थक चुका बातें तुम्हारी  
 बस करो बर्दाश्त होता अब और नहीं  
  
 काली रात है तो उजाला भी होगा जल्द  
 ऐसी कौन सी रात जिसके बाद भोर नहीं  
  
 मेरी सफलताओं के चर्चे होंगे चारों तरफ  
 सुना होगा तुमने ऐसा कभी शोर नहीं  
  
 हक्क से माँगूँगा जीत अपनी सबके सामने  
 चुरा ले जाऊँ कुछ भी मैं वो चोर नहीं  
  
 क्या कर गया मैं ये बैठ कर तुम सोचोगे  
 मेरी उड़ान को पहचान को कब तक रोकोगे  
  
 मजबूर हूँ पर कमज़ोर नहीं  
 मैं कटने वाली पतंग की डोर नहीं  
  
 डरने वाला नहीं मैं तूफानों से अब  
 मेरे हौसलों का देखा तुमने ज़ोर नहीं



उपर लिखी कविता किस कवि ने लिखी है ?

- |                 |                |
|-----------------|----------------|
| A: अमिता प्रितम | B: विकास बंसल  |
| C: अरुण कोलटकर  | D: तिशानी दोशी |

उम्मीद का दामन न छूटे, हौसला न तेरा माने कभी हार  
 आत्मविश्वास से अपने जीत के दिखा दे अबकी बार  
  
 डगमगाये न क्रदम, लड़खड़ाये न क्रदम तू बढ़ता जा  
 क्या असफलता, मिलेगी सफलता तू बस लड़ता जा  
  
 शक्ति तू अपनी पहचान, ज्ञान तुझे दिलाएगा सम्मान  
 कामयाबी चूमेगी क्रदम तेरे, जब क्रिस्मत सुनाएगी फरमान  
  
 बिखर मत, निखर तू, सँवर तू, छू ले सफलता का शिखर तू  
 चल चल चलता चल रख अपनी मंजिलों पर नज़र तू  
  
 बस अब और नहीं कह दे ज़माने से सह मत तू और तिरस्कार  
 सोच समझ कर दे तू जवाब कर हार जीत पर विचार  
  
 उम्मीद का दामन न छूटे, हौसला न तेरा माने कभी हार  
 आत्मविश्वास से अपने जीत के दिखा दे अबकी बार



अमिताब बच्चन विकास बंसल को क्या नाम से बुलाते हैं ?

- |                 |                 |
|-----------------|-----------------|
| A: विकासजी बंसल | B: बंसलजी विकास |
| C: कवि महाशय    | D: कविराज विकास |

खड़ा हूँ आज फिर मैं, कर रहा हूँ आपका इंतजार  
 जवाब देने का वक्त आया, क्या आप हैं तैयार  
 जिन्दगी की कशमकश में जाने कितने सवाल  
 बस कुछ सवाल मेरे भी और आपका कमाल  
 देख ले आज हर शख्स कि आप क्या कर सकते  
 साबित करना हो खुद को तो हर हद से गुज़र सकते  
 ले आओ साथ जवाबों को, दोस्तों को, अपनों को  
 आ गया है वक्त पूरा करने का अपने सपनों को  
 हर लम्हा होगा बेहतरीन आपका और यादगार  
 खड़ा हूँ आज फिर मैं, कर रहा हूँ आपका इंतजार  
 जवाब देने का वक्त आया, क्या आप हैं तैयार



उपर लिखी कविता किस कवि ने लिखी है ?

- |                   |                |
|-------------------|----------------|
| A: अम्रिता प्रितम | B: विकास बंसल  |
| C: अरुण कोलटकर    | D: तिशानी दोशी |

नीदे बहत हल्की है पर ख्वाब हमारे बहुत भारी है  
 उड़ना है अब आसमानों में हौसलों की सवारी है  
 करना चाहते बहुत कुछ पर कुछ भी हो नहीं पाता  
 चाँद की बराबरी करें कैसे ये जुगनुओं की लाचारी है  
 सज चुका है मंच आशाओं का, संभावनाओं का  
 देखो आ रहा है हिन्दुस्तान वहाँ पूरी तैयारी है  
 दिन भर दिन खाए हैं धक्के, सुने हैं ताने लोगों के  
 करवटे बदल बदल कर कैसे कैसे रात गुज़ारी है  
 कब तक रोकोगे मुझे अब कहने से, ज़ज्बातों को बहने से  
 अबकी बार जवाब देने की आई मेरी यहाँ बारी है  
 बहुत हो चुका खोना, रोना बस अब और नहीं, और नहीं  
 है खुशियाँ बस मेरी ही, मेरी उन पर अब दावेदारी है  
 नीदे बहत हल्की है पर ख्वाब हमारे बहुत भारी है  
 उड़ना है अब आसमानों में हौसलों की सवारी है



अमिताब बच्चन विकास बंसल को क्या नाम से बुलाते हैं ?

- |                 |                   |
|-----------------|-------------------|
| A. विकासजी बंसल | B. बंसलजी विकास   |
| C. कर्वि महाशय  | D. कर्विराज विकास |

कब तक रोकोगे खुद को कि तुझे नया इतिहास बनाना है  
 देखेगा हिन्दुस्तान तुझे अब अपना विश्वास दिखाना है  
  
 सुन सुन कर बातें कड़वी तूने गुज़ार दी ज़िन्दगी अपनी  
 सुनाने वालों को तुझे अब खुद आइना दिखाना है  
  
 हदें सब पार कर दी ज़माने वालों ने कह कह कर  
 सब भूल कर तुझे अब हद से गुज़र जाना है  
  
 रो लिये बहुत, सो लिये बहुत सपनों को देखते देखते  
 जो नहीं मिला तुझे आज तक अब तुझे वो पाना है  
  
 कारवाँ गज़र जायेगा और तू शबार देखता रहेगा  
 जीतना है तुझे बस जीतना नहीं हार कर आना है  
  
 करने को स्वागत, अभिनन्दन, आभार सर जी हैं बेकरार  
 बाँहों में खुशियाँ ही खुशियाँ उनकी तुझे मुस्कुराना है  
  
 कब तक रोकोगे खुद को कि तुझे नया इतिहास बनाना है  
 देखेगा हिन्दुस्तान तुझे अब अपना विश्वास दिखाना है



उपर लिखी कविता किस कवि ने लिखी है ?

- |                   |                |
|-------------------|----------------|
| A: अन्निता प्रितम | B: विकास बंसल  |
| C: अरुण कोलटकर    | D: तिशानी दोशी |

कर फ़ैसला, दिखा हौसला, मत सोच क्या है दुनिया की राय  
 हो जा तैयार, अब की बार सर जी ला रहे के बी सी दशम अध्याय  
 हुआ नहीं कछु अब तक किये प्रयास तूने बहुत, मत मान हार तू अभी  
 कर रही इतंजार वो कुर्सी हो सकता है सर जी तुझे उस पर बैठायें  
 सवाल तो ज़िन्दगी रोज़ पूछती है पर जवाब हम दे नहीं पाते अकसर  
 कर ले तैयारी, आ गयी तेरी बारी, क्या पता तू करोड़पति बन जाये  
 माना चला है तू बहुत, तय कर चका सफ़र, बदला नहीं कुछ यहाँ  
 कर प्रयास, छोड़ मत आस, रख विश्वास, बन जा सफलता का पर्याय  
 अब तक था तू वंचित, कर ले ज्ञान अर्जित, समय बचा है संक्षिप्त  
 निकल निराशाओं से, बात कर आशाओं से, ये है सफलता का उपाय  
 कर फ़ैसला, दिखा हौसला, मत सोच क्या है दुनिया की राय  
 हो जा तैयार, अब की बार सर जी ला रहे के बी सी दशम अध्याय



अमिताब बच्चन विकास बंसल को क्या नाम से बुलाते हैं ?

- |                 |                   |
|-----------------|-------------------|
| A: विकासजी बंसल | B: बंसलजी विकास   |
| C: कर्वि महाशय  | D: कर्विराज विकास |

अधूरे हैं ख्वाब, ख्वाहिशें अधूरी रहती हैं  
 क्यों सपनों की हकीकत से दूरी रहती है  
 आता है मौका बार बार बलाता है तझे  
 पर तू आता नहीं क्या मजबूरी रहती है  
 अपनी क्रिस्मत तू खद ही बदल सकता  
 क्यों फिर क्रिस्मत की जी हज़ूरी रहती है  
 किसने कब क्या क्या किया हो मालूम  
 देने को जवाब ये जानकारी ज़स्करी रहती है  
 जवाब पूरा कर सकता हर एक अधूरा ख्वाब  
 आता है मौका बार बार समय की धुरी कहती है  
 अधूरे हैं ख्वाब, ख्वाहिशें अधूरी रहती हैं  
 क्यों सपनों की हकीकत से दूरी रहती है



उपर लिखी कविता किस कवि ने लिखी है ?

- |                 |                |
|-----------------|----------------|
| A: अमिता प्रितम | B: विकास बंसल  |
| C: अरुण कोलटकर  | D: तिशानी देशी |

फिर एक बार १८ साल बाद ये मंच सजेगा  
 हिन्दुस्तान देखेगा और हिन्दुस्तान खेलेगा  
 सवाल है इस बार अलग - कब तक रोकोगे ?  
 हिन्दुस्तान सोचेगा और जवाब खोजेगा  
 कौन रोक पाया हौसलों से उड़ने वालों को  
 उड़ान होगी कैसी ये अब हिन्दुस्तान देखेगा  
 सफर पर फिर निकल चुका है हिन्दुस्तान  
 देखना है वो कब मंजिल पर पहुँचेगा  
 चकाचौथ नहीं ज्ञान की रोशनी होगी यहाँ  
 आँखों में सपने लिये हिन्दुस्तान चमकेगा  
 नया या फिर पराना होगा हिन्दुस्तान यहाँ  
 जात पात, अमौर ग़रीब से ऊपर उठ कर सोचेगा  
 फिर एक बार १८ साल बाद ये मंच सजेगा  
 हिन्दुस्तान देखेगा और हिन्दुस्तान खेलेगा  
 सवाल है इस बार अलग - कब तक रोकोगे ?  
 हिन्दुस्तान सोचेगा और जवाब खोजेगा



अमिताब बच्चन विकास बंसल को क्या नाम से बुलाते हैं ?

- |                 |                 |
|-----------------|-----------------|
| A: विकासजी बंसल | B: बंसलजी विकास |
| C: कवि महाशय    | D: कविराज विकास |